Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Impact Factor : 1.7604(UIF)
Volume-3 | Issue-12 | Jan-2014
Available online at www.lbp.world

भारतीय चिकित्सा शास्त्र का ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. कैलास रामकृष्ण नागुलकर
सहायोगी प्राध्यापक , गुलाम नबी आझाद कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविदयालय
बार्शिटाकळी जि. अकोला महा.

सार :

भारतीय चिकित्सा शास्त्र का इतिहास अत्यंत प्राचनी रहा है। ई. पू. 1500 मे द्रविड़ो पर आर्यों व्दारा आक्रमण किए गया उसके पश्चांत वेदो को लाया गया था और इन वेदो मे चिकित्सा शास्त्र था। ई. पू. 1000 में, चिकित्सा शास्त्र की दार्शनिक नींव सांख्य के माध्यम से उत्पन्न हुई थी। ई. पू. 700 में, चिकित्सा विश्वविद्यालयों का निर्माण हुआ। बौद्ध काल मे ई पू. 500 से 10 वीं शताब्दी तक इस चिकित्सा ज्ञान का विस्तार हुआ। 10 वीं और 12 वीं शताब्दी तक, विभिन्न मुस्लिम आक्रमणों के साथ, भारतीय चिकित्सा संस्कृति के विनाश को सत्यापित किया गया है। 16 वीं शताब्दी में आयुर्वेद के कुछ ग्रंथों को बरामद किया गया था। 16 वीं और 17 वीं शताब्दी में, पश्चिमी सभ्यता के रोगों के कारण आयुर्वेद की बदनामी हुई लेकीन 20 वीं शताब्दी में फिर से प्रकट हुई है।

1.1 प्रस्तावना :

प्राचीन भारतीय विदयाओ मे चिकित्सा शास्त्र प्रमुख विदया है। ऋग्वेद काल से ही इसका क्रमिक विकास प्रारंभ हो गया था और सिंकदर के आक्रमण के समय तक हम देखते है कि यह विदया अपने चरम को पहुँच चुकी थी। जातक कथाओ मे भी हमे चिकित्सा विज्ञान का उल्लेख मिलता है। तक्षशिला विश्वंविदयालय मे बडे गंभीर चीर फाड संबंधी कार्य किये जाते थे। वैदयक शिक्षा के लिये संस्कृत का ज्ञान अनिवार्य था। आयुर्वेद के सभी ग्रंथ इसी भाषा मे थे। इस विज्ञान के विदयार्थी का उपनयन अलग होता था चाहे भले ही उसनक अपने वर्ण के अनुसार

पहिले उपनयन किया हो। यह उपनयन केवल उसी छात्र का हो सकता था जो पूर्ण स्वंस्थ् व उच्चं हो। शरीर के भिन्नं भिन्नं अंगो जैसे आँख, नाक, जिव्हा तथा दांत इत्यादी स्वस्थ् हो। नैतिक साहस, धैर्य, विनय, बुध्दि, उदारता, लगन, अध्यंवसायक, कष्टं सहिंष्णूता आदी गुण आयुर्वेद के एक विदयार्थी के लिये आवश्यंक माने जाते थे। आधुनिक काल मे भी एक पूर्व परीक्षा होती है उसके अनुसार चिकित्सा विज्ञान के विदयार्थी अंदर इस व्यवंसाय संबंधी योग्यंता के अस्तित्वं की परीक्षा करने की चेष्टां की जाती है। किंतु जब हम अपनी प्रणाली को देखत है तो हमे आश्चंर्य होता है कि किस प्रकार उन लागो को चिकित्सा का पूर्ण ज्ञान प्राप्तं हो गया था। उन्होने भली भॉति जान लिया था कि एक चिकित्संक को पूर्ण स्वस्थ् सुंदर तथा चरित्रवान होना चाहिये। पीडित मानवता की सेवा के लिये उसके अंदर सच्चाई, निर्लोभ, निष्काम सेवा तथा विनय होना चाहिये। आयुर्वेद का अध्यंयन चिकित्सा विज्ञान की भिन्नं भिन्नं शाखाओ जैसे निदान, औषधी, शल्यं, सर्पदंश, रक्तं परीक्षा तथा अस्थि आदी मे होता था। एक विभाग के विदयार्थी परामर्श तथा व्यावहारी ज्ञान प्राप्तं करने हेतू अन्यं विभाग के आचार्यो के पास जाते थे। एक चिकित्संक के लिये बहुश्रुता होना आवश्यंक था। अर्थात जब तक असे अनेक विज्ञानी का बोध नही होता था तब तक उसे सफलता मिलना असंभव था। संपूर्ण विज्ञानो को प्रधानता शास्त्र और प्रयोग अर्थात थ्योरी और प्रैक्टिस मे विभाजित कर दिया गया था। दोनो का ज्ञान अनिवार्य था। केवल एक का ज्ञान रखने वाला तथा उसके व्दारा जनता मे अपने अधूरे ज्ञान के व्दारा अभ्यास करने वाला व्यक्ती राज्यं की और से दंडित किया जाता था।

आयुर्वेद पारंपरिक भारतीय चिकित्सा को 5000 साल पहले भारत में विकसित कि गयी चिकित्सा के नाम से जाना जाता है। जो की मानव जाति की सबसे पुरानी औषधीय प्रणाली है। पौराणिक दृष्टि से आयुर्वेद में दो मूलतत्वं हैं। एक धन्वंतरिदेव हैं जिन्होंने मानव पीड़ा कम करने के लिए इस ज्ञान को प्रकट किया था। और दुसरा ब्रह्मा जिन्होंने इस चिकित्सा ज्ञान को प्रजापति दाह के समक्ष प्रकट किया, जिन्होंने आयुर्वेद विश्वकोश को जन्म दिया, जिसे अग्निवेश संधि के रूप में जाना जाता है।

आयुर्वेद की उत्पत्ती चिकित्सा के रूप में मानी जाती है। क्योंकि इसके सैद्धांतिक आधार ने जापान, चीनी, अरब, ग्रीक और रोमन चिकित्सा प्रणालियों प्रभावित किया है। आयुर्वेद भारत की एक आधिकारिक औषधी बनी हुई है, और पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली की एक प्रभावशाली प्रणाली के रूप में दुनिया भर में प्रसारीत हुई है। आयुर्वेद संस्कृत जीवन या दीर्घायु(अयुर) और विज्ञान (वेद) से तथा वेदों और सांख्य दर्शन मे इसकी जड़ें है।

आयुर्वेद मे उल्लेखित है कि मन और शरीर के मध्यं तिन मुख्यं दोष है जिसमे वात, पित्त, कफ का समावेश है, और पंधरा उपदोष जिसके माध्यम से हो सकता है। जीसके गुनस सत्व, रजस, तमस नाम से तिन मुख्य प्रकार हैं। आयुर्वेद के ज्ञान के दो मुख्य उद्देश्य हैं अर्थात्

रोग का निदान करना और रोग के कारणों को खत्म करना जिसे शोधना कहा जाता है। जिसमे एक रोगी की पीड़ा को कम किया जाता है। शोधन के पाच प्रकार हैं जिसमे वामन, विरेचन, नस्य, बस्ती और रक्षा मोक्ष यह है।

आयुर्वेद की मुख्य विशेषता यह रही है की इसमे जीवन शैली पर अधिक जोर दिया है। मनुष्य की दैनिक दिनचर्या जिसमे समय पर भोजन, भोजन का प्रकार, विचारों और भावनाओं की गुणवत्ता आदी को दीनाचार्य के रूप में वर्णित किया गया है। और इसे दीर्घायु के लिए प्रमुख स्रोत के रूप में माना जाता है। इस संबंध में, आयुर्वेदिक का उपयोग शरीर को शुध्दं करने के लिए किया जाता है। जो व्यक्ति के ऊर्जावान अवस्था को बढ़ाने मे मदत करता है, और आरोग्यं चक्रों को संतुलित रखता है। प्रस्तुत शोध मे भारतीय चिकित्सा प्रणाली का ऐतिहासिक दृष्टीसे अध्यंयन किया गया है

1.2 शोध के उददेश :

1. भारतीय चिकित्सा शास्त्र के इतिहास का अध्यंयन करना।
2. वैदिक कला, बौध्दं काल, मुस्लिम काल मे चिकित्सा शास्त्र के प्रकृतीका अध्यंयन करना।

1.3 शोध प्रविधी :

भारतीय चिकित्सा के क्षेत्र मे उपलब्धं व्दितीयक तथ्योका प्रयोग इस शोध मे किया गया तथा ऐतिहासिक दृष्टी से भारतीय चिकित्सा शास्त्र का विश्लेषण किया गया है।

1.4 विश्लेषण :

इस मूल लेख के विस्तार के लिए किए गए शोध कार्य ने हमें निम्नलिखित परिणामों के लिए प्रेरित किया जो पाठक के पढ़ने की सुविधा के लिए उप-अध्यायों में प्रस्तुत किए गए हैं।

आयुर्वेद का इतिहास (3000 A.C. - 1000 AC):

5000 से अधिक साल पहले, इंदू घाटी में रहने वाले द्रविड़ लोग जिन्होने महान शहरों का निर्माण किया जिसमे हड़प्पा, मोहनजो-दोडो और लोथल का समावेश है। यहाँ जो चिकित्सा प्रणाली थी उसमे आयुर्वेद की विशेषता थी और यही इस लोगों की संस्कृति थी। वहॉ विकसित कृषि और वाणिज्य व्यवस्था का अस्तित्वं भी पाया गया। इस सभ्यता में योग की उत्पत्ति भी मौजूद थी।

वेद जिसमे ऋग्वेद, यजुर-वेद, साम-वेद, अथर्व-वेद दुनिया का सबसे पुराना साहित्य है। जिसमें तत्कालीन मानव जाति से संबंधित कई उपयोगी विषय सम्मिलीत हैं, जैसे इंजीनियरिंग,

भौतिकी विज्ञान, जीव विज्ञान, दर्शन, धर्मशास्त्र, ज्योतिष आदी। वेद शास्त्र व्यास व्दारा संकलित शास्त्र हैं, जिसमे ऋषियों व्दारा इसके ज्ञान को मौखिक रूप से प्राप्त किया और संस्कृत में इसका लेखन किया किया। प्रत्येक वेद में चार प्रकार के पाठ हैं, जिसमे संहिता (मंत्र), अरण्यक (अनुष्ठान), ब्राह्मण (टिप्पणियाँ), उपनिषद (दर्शन और तत्वमीमांसा) आदी। पहले वेद से, ऋग-वेद, जो 1700 ईसा पूर्व के आसपास लिखा गया था, अन्य तीन जिसमे अंतिम वेद, अथर्व-वेद से, यह आयुर्वेद मे दिखाई देता है। अथर्व-वेद, जो ऋषियों के दो समूहों से मिलकर बना था, जिन्हें भृगु और अंगिरास के नाम से जाना जाता है यह स्वास्थं की देखभाल, नैतिकता और आध्यात्मिक गतिविधि पर व्यावहारिक शिक्षण की एक पुस्तिका है, जिसमें जड़ी-बूटि, शरीर रचना विज्ञान, शरीर विज्ञान, सर्जरी और उसके विभिन्नं उपयोग का विवरण हैं। तिसमे शारीरिक और मानसिक उपचार को भी सम्मिलित किया गया था।

आयुर्वेद एक निवारक दवा है, जो रोगी पर पर्यावरण, शरीर (प्राण), इंद्रियों (इंद्रिया), मन (मन), और आत्मा को ध्यान में रखते हुए तथा पृथ्वी, वायु, जल, अग्नि इस प्रकार समग्र तरीके से उपचार करती है। व्यक्ती के स्वास्थ्य की स्थिति इन तत्वों के सामंजस्य को दर्शाती है। इस संतुलन को प्राप्त करने के लिए, जीवन में प्रमुख चार लक्ष्यों को ध्यान में रखना आवश्यक है। धर्म तथा कानून पर्यावरण के लिए एक सामाजिक व्यवहार है, यही भौतिक समृद्धि का अर्थ है। काम का अर्थ आनंद और भावुकता की पूर्ति , मोक्ष का अर्थ मुक्ति या आध्यात्मिक पूर्ति है।

ऋग्वेद यह सबसे पुराना वेद है, तथा हिंदू साहित्य का सबसे पुराना दस्तावेज़ है। जिसका गठन 1028 भजनों, अनुष्ठानों और देवताओं को प्रसाद के रूप में किया गया है। साम-वेद या अनुष्ठान गीतों के वेद में पुजारियों व्दारा गाए जाने वाले भजन होते हैं। जिसमें विभिन्न देवताओं को सोमा पौधे का रस चढ़ाया जाता था। यजुर वेद या बलि निषेध में धार्मिक ग्रंथों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। जिसमें शुक्ल (श्वेत) और कृष्ण (काला), दो संग्रहों को शामिल किया जाता है। अथर्व-वेद सबसे पहला लिखित खोजपूर्ण चिकित्सक वेद है। इसका उद्देश्य वेदों पर विस्तृत अध्ययन करना नहीं, बल्कि इसे लेख के विषय के संदर्भ में सम्मिलित करना है।

आयुर्वेद सांख्य दार्शनिक प्रणाली पर आधारित है। जो ई.पू.1000 के आसपास दिखाई दिया, जिसमे आयुर्वेदिक चिकित्सा अभ्यास में दो अलग-अलग स्कूलों का निर्माण किया। जिसमे धनवंतरी-सम्प्रदाय, और ब्रह्म-सम्प्रदाय जिसमे निदान तथा विभिन्न उपचारों को अधिक महत्व दिया जाता था।

आयुर्वेद विश्वविद्यालयों की उपस्थिति (ई.पू.700 -ई.पू.500):

भारत में लगभग ई.पू. 700 मे आयुर्वेद विश्वविद्यालयों का उदय हुआ। जिसमे दो मुख्य विश्वविद्यालय थे, उनके नाम काशी और नालंदा थे। यहाँ की शैक्षणिक सामग्री में

विज्ञान, प्रशिक्षण (विद्या), तर्क (तारक), स्मृति (स्मृति), चिकित्सा आदी को सम्मिलीत किया गया था। अभ्यास के लिये आयुर्वेद की आठ शाखाएँ निर्धारित कि गयी थी जिसमे कायचिकित्सा (आंतरिक चिकित्सा), सालाकिचिकित्सा (ओटोलर्यनोलोजी), बालचिकित्सा (बाल चिकित्सा), सलियाचिकित्सा (सर्जरी), ग्रैचिकित्सा (मनोरोग), वाजीकरना (प्रजनन चिकित्सा), रसायण (कायाकल्प) आदी।

लगभग ई.पू.700 और ई.पू. 500 मे आयुर्वेद पर महत्वपूर्ण चिकित्सा ग्रंथों की रचना की गई, जिसे त्रयी के संकलन के रूप में जाना जाता है। अर्थात्, अष्टांग हृदयम (आयुर्वेद का दर्शन) - वाग्भट्ट द्वारा निर्मित - चरक संहिता (एक ग्रंथ) आंतरिक चिकित्सा - अपने शिष्य अग्निवेश को ऐतरेय की शिक्षाओं का पता चलता है - और सुश्रुत संहिता (शल्य चिकित्सा ग्रंथ) - धन्वंतरी की शिक्षाओं के बारे में अपने शिष्य सुश्रुत से बात करती है।

अष्टांग हृदयम शरीर के अच्छे कामकाज श्वास, पाचन और चयापचय, तापमान विनियमन के लिए दार्शनिक सिद्धांतों से संबंधित है और इसमें धातुओं और खनिजों के चिकित्सीय उपयोग के लिए सुझाव हैं

चरक संहिता को एक पुरानी मौखिक परंपरा की रचना माना जाता है। जो कि कायाचिकित्सा व्दारा के नाम से आयुर्वेद की शाखाओं में केंद्रित है। यह संस्कृत में लगभग 8400 छंदों से बना है। जो आयुर्वेद छात्र स्मृति के आधार पर दोहराया करते थे। सुश्रुत संहिता से पता चलता है कि, भारतीय चिकित्सक सबसे पहले 100 से अधिक सर्जिकल उपकरणों के ज्ञान के साथ साथ प्लास्टिक सर्जरी के क्षेत्र मे संपन्नं थी। जो की वर्तमान से बहुत अलग नहीं है। इसमे हर्नियास, मोतियाबिंद, ब्रेन ट्यूमर और अन्य प्रकार की गंभीर चोटों आदी पर उपचार किये जाते थे इसके संचालन का वर्णन प्राप्तं होता है।

इस अवधी की विशेषता यह है की, अभी के भी अन्य ग्रंथ हैं जो की इतने महत्वपूर्ण नहीं है। अर्थात् शारंगधारा संहिता जिसमे आयुर्वेद का संक्षिप्त विवरण है भाव प्रकाशन जिसमे शरीर के कायाकल्प के लिए उपचार दिया गया है, माधव नरोत्तम इसमे आयुर्वेद में कई रोगों का उपचार दिया गया है, कश्यप संहिता, अग्निवेश संहिता, भेला संहिता, हरिता संहिता, भैरवध्वज संहिता और अगस्त्य संहिता यह लेखन संस्कृत में बना हुआ है।

10 वीं शताब्दी तक बौद्ध काल (ई.पू.500 - 10 वीं शताब्दी): -

बुद्ध के समय (ई. पू. 563-483) में आयुर्वेद बहुत विकसित था और उन्होंने अपने अभ्यास और अध्ययन को प्रोत्साहित किया, कई विश्वविद्यालयों ने आयुर्वेद के विकास में अपना योगदान दिया है। इसके अलावा, बौद्ध भिक्षुओं ने पारंपरिक चीनी मेडिसिन के साथ आयुर्वेद के ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया।

इस अवधि में आयुर्वेद का विकास भी शासन के समर्थन के कारण हुआ था। जो की कम लागत पर जनसंख्या को स्वस्थ रखना चाहते थे। इस अवधि के आयुर्वेद के महान चिकित्सकों में से एक बौद्ध नागार्जुन नालंदा विश्वविद्यालय के निदेशक थे। जिन्होंने आयुर्वेद को पढ़ाया और सुश्रुत पर कई टिप्पणियाँ लिखीं है। तथा कुछ रसायन विदया का अभ्यास किया जिसे रस शास्त्र के रूप में जाना जाता था। इसने यूनानी चिकित्सा पद्धति को गहराई से प्रभावित किया। नागार्जुन को सुरानंद, नागबोधी, यशोधना, नित्यानथ, गोविंदा, अनंतदेव, वाग्भट्ट, सहित अन्य लोगों ने सफल बनाया।

चंद्रगुप्त मौर्य ई. पू.321-297 के शासनकाल की आयुर्वेद चिकित्सा तकनीकी ब्रिटिशो के उपनिवेश तक जारी रही। सम्राट अशोक सम्राट ई. पू. 273-236 ई. पू. ने करुणा की बौद्ध शिक्षा से प्रभावित होकर कई अस्पतालों का निर्माण करने का फैसला लिया था। जिन्होंने आयुर्वेद के विकास में भी योगदान दिया है।

मध्य युग की अवधि के आयुर्वेद के मुख्य लेखकों में से चिकित्सक वाग्भट्ट ने 7 वीं शताब्दी मे पारंपरिक आयुर्वेद में विभिन्न ज्ञान का जोड़ा था। इसके अलावा, 8 वीं शताब्दी में, माधव ने निधना को लिखा, जिसमें 79 अध्याय हैं, जिसमें विभिन्न बीमारियों और उनके कारणों का वर्णन किया गया है। साथ ही चेचक मसुरिका पर एक अध्याय भी है। इसके अलावा, चक्रपाणि दत्ता जो 11 वीं शताब्दी मे आयुर्वेद के एक चिकित्सक थे उन्होंने आयुर्वेद पर कई किताबें लिखीं।

मुस्लिम आक्रमण और मंगोल काल (10 वीं शताब्दी - 12 वीं शताब्दी): -

१० वीं शताब्दी से १२ वीं शताब्दी तक, उत्तर भारत में मुस्लिम शासको व्दारा कई आक्रमण हुए। जिससे आयुर्वेद शास्त्र काफी मात्रा के विलुप्त हुआ। वास्तव में मुसलमानों ने१० वीं शताब्दी से भारत पर आक्रमण करना प्रारंभ किया था, जिसके कारण लगभग ४०० मिलियन हिंदू और बौद्धों लोगो की मृत्यु हुई इसे इतिहास में सबसे बड़ा नरसंहार माना जाता है। इसके प्रश्चांत उन्होने भारतीय लोगों पर अपनी यूनानी चिकित्सा प्रणाली की संस्कृति को लागू करना प्रारंभ किया। साथ ही अस्पताल की अवधारणा को भी प्रस्थापित किया जहां चिकित्सक विभिन्न रोगों के इलाज के लिए एक साथ मिलते थे।

16 वीं शताब्दी में, आयुर्वेद के कुछ ग्रंथ जो अरबों व्दारा नष्ट नहीं किए गए थे, उन्हें सबसे बड़े मुस्लिम मंगोलियाई सम्राट अकबर के आदेशो पर बौद्ध और तिब्बती भिक्षुओं व्दारा पुर्नप्राप्तं और संकलित किया गया था। उनके कारण कुछ चिकित्सा कार्य सामने आए हैं। जैसे कि महा निडाना जो रोगों के निदान पर केंद्रित है, राजा निघंटु और मदनपाल निघंटु इन्होने जड़ी-बूटियों पर दो महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। साथ ही 16 वीं शताब्दी में, उस समय के सर्वश्रेष्ठ

विव्दान माने जाने वाले भावमिश्र ने एक महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखा, जिसे भाव प्रकाशन कहा जाता है। यह ग्रंथ पश्चिमी संस्कृति के साथ संपर्क होने के अवधि भी था। जिसमे प्रथम संपर्क पुर्तगालियों के साथ, उसके बाद फ्रांसीसी और अंत में अंग्रेजों के साथ हुआ था।

पश्चिमी काल (16 वीं शताब्दी -20 वीं शताब्दी): -

16 वीं और 17 वीं शताब्दियों में, यूरोपीय लोग भारतीय संस्कृति के संपर्क में आए, उन यूरोपीय व्यक्तीयो की बीमारियों जिसमे सिफलिस और तपेदिक इसका पर्याप्तं उपचार करणे मे आयुर्वेद प्रक्रिया विफल रही। जिसके कारण कई दशकों तक, विभिन्न आयुर्वेद स्कूलों की प्रतिष्ठा और कौशल्यो में काफी गिरावट आई। तथा अंग्रेजी चिकित्सा की शुरुआत हुई और पश्चिमी विशेषताओं के अस्पतालों के निर्माण को प्रोत्साहन दिया गया। इस प्रकार, 1835 के बाद से, पश्चिमी चिकित्सा को कानूनी रूप से मान्यता प्राप्त हुई थी। तथा वैद्य और शिष्य के बीच आयुर्वेद के मौखिक संचरण मे भारी गिरावट आई।

1947 में, भारतीय स्वतंत्रता के साथ, महात्मा गांधी के नेतृत्व में, आयुर्वेद ने एक बार फिर से भारतीय चिकित्सा में प्रमुख स्थान पर कब्जा कर लिया था। भारतीय परिवेश मे 1970 के दशक से, आयुर्वेद के मूल्य को फिर से मान्यता दी गई है। यह वास्तंव है कि हिंदू चिकित्सा प्रणाली समय के साथ साथ परिवर्तीत हुई है। लेकिन आज के युग मे आयुर्वेद भारत की सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली का अहमं हिस्सा है। आयुर्वेद की एक किस्म दक्षिण भारत में काफी प्रचलित है। और इसे सेंट्रल काउंसिल ऑफ मेडिसिन ऑफ इंडिया व्दारा नियंत्रित किया जाता है।

1.5 निष्कर्ष: -

भारतीय संस्कृति कई नस्लों से बनी है। प्रारंभ में, भारत में जो तिन जातीय समूह शामिल थे जिसमे ब्लैक (द्रविड़ संस्कृति), इंडो-यूरोपियन (आर्यन संस्कृति), मंगोलियाई और अरब (पूर्वी संस्कृति) का समावेश था। भारतीयों ने अपने धर्म के साथ साथ अपनी परंपराओं को संरक्षित करने की निरंतर मांग की है। लेकीन रीति-रिवाजों और विचारों के लोगों ने इसे अवशोषित किया है। यह पारंपरिक भारतीय चिकित्सा से स्पष्टं होता है, जहां बौद्ध, अरब और यूरोपीय संस्कृतियों के कई प्रभाव हैं। इस अध्यंयन से स्पष्टं होता है कि, आयुर्वेद का भारतीय इतिहास समाज और संस्कृति के अभिन्न अंग के रूप में, सामान्य रूप से चिकित्सा के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर के रूप में जाना जाता है।

संदर्भ ग्रंथ :

- Dasgupta, Surendranath. (1997). A History of Indian Philosophy. Motilal Banarsidass. Vol. 1
- Edde, Gerard. (2010). Medicina Ayurvédica. Ibis Press.
- Karambelkar, Vinayak Waman. (1961). The Atharva-Veda and The Ayur-Veda. Nagpur: Usha Karambelkar.
- Macdonell, Arthur Anthony. (1974). Vedic Mythology. New Delhi: Motilal Banarsidass.
- Mukhopadhyaya, Girindranath. (2003). History of Indian Medicine. Munshiram Manoharlal Publishers. Vols. 1, 2 and 3.
- Kapur, Kamlesh. (2010). Portraits of a Nations: History of India**.** Sterling Publishers.
- Kasanas, Nicholas. (2009). Indo-Aryan Origins and Other Vedic Issues. New Delhi: Aditya Prakashan.
- Kutumbiah, Pandipeddi. (1974). Ancient Indian medicine. Bombay: Orient Longmans.